डेढ़ एकड़ में सब्जी उगाकर कमा रहे प्रतिदिन 5000 रुपये 3 मजदूर और दो घर के सदस्य जुटे हैं दिन–रात

डॉ. होशियार सिंह
महेन्द्रगढ़, हरियाणा

हरियाणा के जिला महेंद्रगढ़ के क्षेत्र में कुछ वर्षों से सब्जी की खेती में तेजी आई है। कनीना के आधा दर्जन किसान सब्जी की खेती कर अच्छी कमाई कर रहे हैं और दूसरों के लिए उदाहरण बन रहे हैं। कनीना उपमंडल के गांव मोड़ी का राज्य पुरस्कार से सम्मानित किसान गजराज सिंह एवं उसका परिवार प्रतिदिन महज डेढ़ एकड़ जमीन पर सब्जी की पैदावार कर पांच हजार रुपये कमा रहा है। साथ ही मल्चिंग एवं बूंद सिंचाई योजना अपनाकर जल संरक्षण भी कर रहा है वे एक ओर जहां जल की बचत कर रहे हैं वही विद्युत मशीन लगाकर फसल की पशुओं से सुरक्षा भी कर रहे हैं। जिससे कोई भी पशु इस फसल के आसपास तक नहीं दिखाई देता।

गजराज सिंह के दिशा निर्देशों में उनके परिवार के अजय कुमार तथा कांता देवी हाथ बंटा रहे हैं तथा तीन मजदूर भी इस काम में लगाये हुये हैं। फरवरी माह के प्रथम सप्ताह में उन्होंने सब्जी उगाई थी। सब्जी उगाने का उनका लंबा अनुभव होने के कारण वे सब्जी की ओर आकर्षित हुए हैं। विगत पांच वर्षों से वे लगातार सब्जी उगा रहे हैं। उनका कहना है कनीना सब्जी मंडी 12 किलोमीटर दूर पड़ती है। सब्जी मंडी स्थापित होने के बाद उनका खर्चा कम हो गया है और बचत बढ़ गयी है। यही नहीं कभी कभी वे अपनी सब्जी को महेंद्रगढ़ सब्जी मंडी में भी ले जाते हैं। उनकी सब्जी पैदावार में दो विशेषताएं देखने को मिलीं एक तो वे मल्चिंग और ड्रिप सिंचाई से सब्जी की पैदावार लेते हैं और सब्जी उत्पादन के लिए चुन्नी की कतरन विशेष रूप से प्रयोग करते हैं। उन्होंने बताया कि करीब 80 चुन्नी फाड़ कर उनकी कतरन बना कर लौकी एवं तोरई आदि की बेल को ऊपर तक चढ़ाया जाता है। पूरे खेत में इसका जाल बिछा हुआ है ताकि उस पर सब्जी की बेल चढ़ सके। और अच्छी पैदावार दे सके। दूसरी विशेषता बताते हुए किसान ने बताया कि पूरे खेत की रखवाली हेतु विद्युत मशीन लगवा रखी है। जिसकी सहायता से करीब 5000 रुपये की लागत से पूरे खेत की सुरक्षा की जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों से लेकर शहरी क्षेत्रों में आवारा पशु जैसे नीलगाय एवं बंदर विशेष रूप से परेशान करते हैं। किंतु विद्युत मशीन के लगने से खेत के अंदर कोई भी जानवर नहीं आ पाता। क्योंकि यह मशीन केवल विद्युत करंट का झटका देती है जिससे उस पशु की मृत्यु नहीं होगी बल्कि विद्युत का करंट लगने से वह दोबारा खेत के निकट नहीं आएगा। इस प्रकार फसल की सुरक्षा अपने आप ही हो जाती है। उन्होंने बताया कि वे जल संरक्षण के लिए लंबे समय से कार्य कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि मोड़ी गाँव की पूरी कॉलोनी ने वर्षा जल संरक्षण के लिए नाम कमाया है। उन्होंने बताया इंसान अगर चाहे तो सब्जी की पैदावार लेकर आय प्राप्त कर सकता है और उन लोगों के लिए उदाहरण बन सकता है जो हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं।

किसान ने पैदा किया 1 किलो 70 ग्राम का बैंगन

क्षेत्र के किसान सब्जी उगाने के लिए अग्रणी माने जाते हैं। जहां विगत वर्षों में 10 किलोग्राम की लौकी, 8 किलोग्राम की मूली, आधा किलो की मौसमी, तीन किलोग्राम की चुकंदर, 1.070 किलोग्राम का देसी टिंडा आदि पैदा करके किसानों ने नाम कमाया है वहीं वर्तमान में मोड़ी के गजराज सिंह के निर्देश में उनके परिवार के अजय एवं कांता ने अपने सब्जी के खेत से 1 किलो 70 ग्राम का बैंगन पैदा किया है। उन्होंने बताया कि खेत में ऐसे अनेकों बैंगन लगे हुए हैं।

जल संरक्षण पर नाम कमाया है पूरी ढाणी ने

एक पूरा परिवार ही नहीं अपितु एक ढ़ाणी के सभी लोग वर्षा के जल का न केवल फसल की सिंचाई में उपयोग कर रहे हैं वरन् भूमिगत जल को पुनः पूरित करके जनहित के कार्य में लगे हुए हैं। घर से निकलने वाले गंदे जल को भी वे भूमिगत जल के पुनः पूरण एवं फसल उगाने के लिए प्रयोग ले रहे हैं।

इस ढ़ाणी के लोगों को यह नेक सलाह कृषि विभाग के एक अधिकारी ने दी और इस ढाणी के एक व्यक्ति ने सभी को जल की बचत करने की सलाह देकर न केवल घरों का गंदा जल पुनः पूरित करने का मन बनाया अपितु वर्षा का समस्त छतों का जल सिंचाई के काम में लेने तथा उसे संरक्षित करने का मन बनाया। यह कहानी मोड़ी गांव की एक ढ़ाणी धोला कुआं के लोगों की है।

इस ढ़ाणी के पूर्व सरपंच गजराज सिंह की करीब चार वर्ष पूर्व कृषि अधिकारी से भेंट हुई थी जिन्होंने बताया कि जल का दोहन यदि ऐसे ही होता रहा तो आने वाले समय में जल की भयंकर समस्या उत्पन्न हो जाएगी। इसके लिए

उन्होंने वर्षा जल संरक्षण एवं उस जल से सिंचाई करने तथा घरों से निकलने वाले गंदे जल से भूमिगत जल को पुनः पूरित करने की सलाह दी। यह सलाह किसान एवं पूर्व सरपंच गजराज सिंह को इतनी अधिक प्रभावित कर गई कि उन्होंने समस्त ढ़ाणी के लोगों को मिल बैठकर छतों से बहने वाले वर्षा जल को दो कुंडों में एकत्र करने की सलाह दी। क्षेत्र के लोग करीब पांच वर्षों से इस कार्य में लगे हुए हैं।

गजराज सिंह की ढाणी के समस्त लोगों ने अपनी छतों से बहने वाला वर्षा जल धरती तक पाइपों से लाकर दो कुंडों में छोड़ रखा है जो सिंचाई के काम आता है। वहीं घरों का समस्त गंदा जल नालियों द्वारा एक पुनः पूरित बोर में एकत्र होता है जिससे भूमिगत जल पुनः पूरित हो रहा है। उनका कहना है कि सभी लोग यदि इस विधि का उपयोग करें तो वह दिन दूर नहीं जब गिरते भूजल स्तर की समस्या समाप्त हो जायेगी।

कई बार अल्प संसाधन होते हुए भी कोई किसान अपनी मेहनत के बल पर ऐसा करिश्मा कर दिखलाता है जिसके चलते उसके पदचिह्नों पर अन्य किसान भी चलने को मजबूर हो जाते हैं। यह किसान अल्प संसाधनों के चलते न केवल जल संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है वरन् आधुनिक खेती, जैविक कृषि, बागवानी, पशु पालन एवं सोलर ऊर्जा का उपयोग करके किसानों को अपनी बनाई राह पर चलने को मजबूर कर रहा है।

दक्षिणी हरियाणा के जिला महेंद्रगढ़ में जल की कमी होती जा रही है। विशेषकर भूमिगत जल स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। नारनौल एवं नांगल चौधरी क्षेत्रों में भूजल स्तर इतना कम हो गया है कि इस क्षेत्र को डार्क जोन घोषित कर दिया गया है। कनीना क्षेत्र में किसानों का कहना है कि प्रतिवर्ष भूमिगत जल दस फीट नीचे जा रहा है। इस समस्या को कम करने के लिए किसान गजराज सिंह अपने आस पास के पूरे क्षेत्र में वर्षा जल का संरक्षण करके न केवल कृषि सिंचाई के लिए अपितु पेड़ पौधों के लिए जल का उपयुक्त प्रयोग करना सिखा रहे हैं। गजराज सिंह न केवल स्वयं ही जल का संरक्षण कर रहे हैं अपितु अपनी ढाणी के लोगों को भी प्रेरित कर रहे हैं।

समस्त क्षेत्र के लोगों ने उनकी बात पर अमल किया है। इस जल का उपयोग कृषि कार्यों में किया जा रहा है वहीं अधिक जल होने पर पुनः पूरित बोर में पहुंचा दिया जाता है जिससे भूमिगत जल का पुर्नभरण हो रहा है। वे अब दूसरों के लिए उदाहरण तो बने हैं किंतु स्वयं भी लोगों को गोष्ठियों में जल संरक्षण की सलाह दे रहे हैं। बतौर सरपंच भी उन्होंने जल संरक्षण की घर–घर बात चलाई है। कई बार कृषि क्षेत्र में सम्मान प्राप्त गजराज सिंह ने घरों से निकलने वाले गंदे जल को तथा पशुओं के लिए प्रयोग करते वक्त बहने वाले जल को नालियों द्वारा पुनः पूरित बोर में पहुंचाया। इस प्रकार उन्होंने जल संरक्षण के क्षेत्र में एक समुदाय की स्थापना कर डाली है।

आज उनकी ढ़ाणी में करीब एक दर्जन परिवारों ने उनके पदचिह्नों पर चलकर वर्षा जल एवं घरों के अशुद्ध जल को एकत्र करके भूमिगत जल का संरक्षण करने व पुनः पूरित करने की योजना पर अमल किया है। सभी ने गजराज की सलाह स्वीकार कर अपने घरों की छतों से अपने–अपने खर्च पर पाइप लगाकर वर्षा जल को दो कुंडों तक पहुंचाया इन दो कुंडों का निर्माण करीब साठ हजार रुपये की लागत से किया गया है जिसमें एक बोर भी करवाना पड़ा है। वर्षा का सारा जल एवं घरों से निकलने वाला गंदा जल इन्हीं कुंडों में चला जाता है। कुछ को भूमि सोख लेती है तथा कुछ को पाइपों द्वारा खेतों तक ले जाया गया है। अधिक जल पुनः पूरित बोर से भूमि में चला जाता है।

किसान गजराज सिंह ने बताया कि इस पुनः पूरित बोर से कई लाभ प्राप्त हुए हैं। इस बोर के पास ही एक डीप बोर भी करवाया गया जिसका जल अधिक ऊंचाई पर होने के अलावा अन्य ट्यूबवेलों की अपेक्षा अलग ही प्रकृति का है। कुंडों का जल पौधों एवं सब्जी उत्पादन के लिए भी उत्तम है। यही कारण है कि वे लगाए जाने वाले पौधों की सिंचाई के लिए वर्षा का संचयित किया हुआ जल ही प्रयोग करते हैं। इससे पौधों की बढ़ोत्तरी भी अधिक होती है।

किसान गजराज के इस पुनः पूरित बोर से करीब एक हजार लीटर जल प्रतिदिन भूमि में पुनः पूरित हो जाता है। ढाणी के सभी किसानों ने अपने घरों की छतों को साफ करवा रखा है जिसके कारण वर्षा का समस्त जल पाइपों से होकर कुंडों में चला जाता है जो या तो फसल के काम आता है या फिर पुनः पूरित बोर से जल संरक्षण का कारण बनता है। वे हर घर एवं हर किसान को इस विधि से जल का संरक्षण करने की सलाह देते हैं ताकि जल की कमी एवं अनावश्यक खर्च को बचाया जा सके। किसान उनकी योजना से प्रसन्न हैं।

3 गांवों के 10 किसान उगाएंगे अजोला घास, प्रोटीन युक्त दुधारू पशुओं के लिए उत्तम चारा

कनीना उपमंडल के गांव गोमला, भोजावास और मोड़ी के 10 किसान अब अजोला घास उगाएंगे जिसकी तैयारियां

प्रगति पर हैं। अभी तक यह योजना रेवाड़ी जिले में ही चल रही थी किंतु अब इसे महेंद्रगढ़ जिले में भी कार्यान्वित किया गया है। इस कार्यक्रम को गैर–सरकारी संगठन (NGO) संचालित कर रहा है। यह संस्था न केवल फलदार पौधे, अपितु केंचुआ पालन एवं अजोला घास उत्पादन आदि पर 1.35 लाख रुपये खर्चा करेगी जिसमें से 25 हजार रुपए खर्चा किसान को स्वयं वहन करना होगा।

विस्तृत जानकारी देते हुए मोड़ी के पूर्व सरपंच गजराज सिंह, अजय यादव तथा कांता यादव ने बताया कि अजोला घास के लिए एक 6 फुट चौड़ा, 12 फुट लंबा तथा 1 फीट ऊंचा बेड तैयार किया जाता है जिसमें जल भरकर एक क्विंटल मिट्टी व 50 किलो गोबर की खाद डालकर घास उगाई जाती है। 45 दिन में इस बेड का जल बदल दिया जाता है और घास पर्याप्त पैदावार देने लग जाती हैं। यह घास पशुओं के लिए उत्तम प्रोटीन का काम करती है और यह लंबे समय तक उत्पादन प्रदान करती है। दुधारू पशु को यदि यह घास दी जाए तो निश्चित रूप से दूध में वृद्धि होगी। राजस्थान के अजमेर में इस कार्यक्रम को प्रारंभ में संचालित किया गया और धीरे–धीरे यह पूरे देश में फैलता जा रहा है। मोड़ी की कांता यादव यह घास उगाने में लगी हैं। उन्होंने बताया 50 फलदार पौधे, केंचुआ पालन केंद्र तथा अजोला घास उगाने के लिए NGO सभी सुविधाएं प्रदान करेगा। वैसे भी कांता सहित 3 गांवों में 10 किसान इस प्रयोग को अपना रहे हैं तथा भविष्य में यदि सुखद परिणाम आए तो निश्चित रूप से इस घास की ओर अधिक किसानों का रुझान बढ़ेगा।

कनीना निवासी डॉ होशियार सिंह यादव अजोला घास के बारे में जानकारी देते हुए कहते हैं कि यह एक प्रकार का फर्न है जो शैवाल से मिलता जुलता है। अक्सर यह धान के खेत में उगाया जाता है और तेजी से बढ़ता चला जाता है। यह एक उर्वरक पैदा करने वाला फर्न है। कुछ लोग तो इस फर्न को खाद्य रूप में भी चटनी, सब्जी एवं पकौड़ी बनाने के काम में लेते हैं। वास्तव में अजोला की पंखुडियों में नीली हरी शैवाल पाई जाती है जो वायुमंडल की नाइट्रोजन को शोषित कर पौधे में नाइट्रोजन की पूर्ति करती है। यह 5 दिनों में अपने से 2 गुना हो जाती है। अजोला सुपाच्य पशुओं का सस्ता आहार है जो दूध को बढ़ाता है बांझपन को हटाता है, शरीर में फास्फोरस की कमी को दूर करता है। इसमें अनेकों पौष्टिक पदार्थ आमीनो अमल, विटामिन, खनिज लवण, लोहा, तांबा, मैग्नीशियम आदि पाए जाते हैं। दूध देने वाले पशुओं को 1 से 2 किलो अजोला प्रतिदिन दिया जाता है इससे दूध की पैदावार 20 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। उन्होंने बताया कि अजोला घास उत्तम चारा है जिसे हर किसान को उगाना चाहिए।